चाँदनी | Hafiz Jamal Qawwal |

आरिज़े आरिज़ गेसू चागेसू
सुबह की सुबह शाम की शाम

आरिज़े कुर्नूर की
अल्लाह हू अकबर चाँदनी
आसमान पर आप थे
और थी ज़मीन पर चाँदनी

रोज़े अव्वल ख़ालिके
कौनैन ने खुद कह दिया
चाँद अहमद मुस्तफ़ा है
सब पैग़म्बर चाँदनी

छिप गया जिस रोज़ से
ज़ेरे ज़मीं माहे अरब
शम्मा लेकर ढूँढती
फिरती है घर-घर चाँदनी

जिस तरह पहरा दिया
करते हैं दोनों रात भर
चाँद अंदर रौज़े के
रौज़े के बाहर चाँदनी

आसमान पर जबके पहुँचे
जाके देखो शाहीदी
जब सबे मेराज पहुँचे
आसमान पर शाहीदी

चाँद सदके हो गया
क़दमों के नीचे चाँदनी

हूरो विलमा करते हैं
उर्से मज़ारे मुस्तफ़ा
और चढ़ाने के लिए
लाती है चादर चाँदी

रोते थे जिस दम चटाई
पर मोहम्मद मुस्तफ़ा
तो बिछाने के लिए
लाती थी चादर चाँदनी

जब सफ़ेदो रौज़ाए
शब्बीर की होने लगी
गिर्द रौज़े के फिर
चुनने में मिलकर चाँदनी

हश्र तक नूरे मोहम्मद
की रहेगी रोशनी

चार दिन की है ये तेरी
माहे अनवर चाँदनी

आरिज़े कुर्नूर की
अल्लाह हू अकबर चाँदनी

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9a%e0%a4%be%e0%a4%81%e0%a4%a6%e0%a4%a8%e0%a5%80-hafiz-jamal-qawwal/